महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती: विविधिकरण एवं आय बढ़ाने हेतु एक विकल्प" प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा वन विज्ञान केंद्र जगतसुख, मनाली कुल्लू में "महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती: विविधिकरण एवं आय बढ़ाने हेतु एक विकल्प" विषय पर 13 दिसम्बर, 2022 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर **श्री अमर चंद शर्मा,** मुख्य प्रधान अरण्यपाल (सेवानिवृत) मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और उन्होंने अपने भाषण में औषधीय पौधों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य को सराहा और किसानों को औषधियों पौधों को अतिरिक्त आय हेतु उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि जंगलों में औषधीय पौधों का संरक्षण जरूरी है खेती के विविधिकरण हेतु किसानों को औषधियों पौधों उगाना जरूरी है, हम केवल सेब पर निर्भर नहीं रह सकते। **डॉ. संदीप शर्मा,** निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने बताया कि औषधीय और सुगंधित पौधों की उत्पादकता बढ़ाने और सतत विकास के लिए जैविक खेती जरूरी है। उन्होंने औषधियों पौधों कि मार्केटिंग पर विस्तृत में जानकारी सांझा की। इसके अलावा उन्होंने मुश्कबाला एवं कडु की मैक्रो प्रोलीफिरेशन तकनीक के बारे में भी बताया। डॉ. कुलराज सिंह कपूर सेवानिवृत वरिष्ट वैज्ञानिक ने कहा कि औषधीय पौधों को उगाने के लिए स्वयं सहायता समूह बनाकर कलस्टर बनाया जाना जरूरी है ताकि अधिक मात्रा में औषधीय पौधों को उगा सके और इसके उत्पाद को बाजार में बेचा जा सके और किसानों को उचित दाम मिल सके।

डॉ॰ जगदीश सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अपनी प्रस्तुति में "ग्रामीण आय वृद्धि एवं विविधीकरण हेतु प्रमुख उच्च औषधीय गुणों वाले शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती" पर जानकारी दी तथा बताया कि वर्तमान समय में औषधीय पौधों के महत्व एवं कृषिकरण से अतिरिक्त आय बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा वनककड़ी, कडु तथा मुश्कबाला आदि महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली गयी है और इन्हें खेती हेतु विभिन्न हितधारकों की बीच बांटा जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि क्षेत्र की जलवायु तथा भूमि जड़ी बूटियों को उगाने के लिए अनुकूल है और किसान इसे अपनाकर अपनी आय को और बढ़ा सकते हैं। इन मूल्यवान औषधीय

पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है । इन औषधीय पौधों को हार्टिकल्चर जैसे कि सेब के मध्य उगाया जा सकता है, क्योंकि सेब की छाया के नीचे अन्य पौधों को नहीं उगा सकते, परंतु औषधीय पौधों को उगाया जा सकते है । संस्थान ने इसके लिए तकनीक विकसित कर मॉडल तैयार कर लिए हैं। औषधीय पौधों के कृषिकरण से दवा कंपनियों की मांग पूरी कर सकते हैं तथा गुणवत्ता सामग्री सुनिश्चित होगी और प्राकृतिक आवास में दबाव भी कम होगा। साथ में औषधीय पौधों को उगाकर किसान अतिरिक्त आय कमा सकते है । डॉ॰ अश्वनी तपवाल वैज्ञानिक ने औषधीय पौधों की जैविक खेती में कृषि और वन पारिस्थितिकी प्रणालियों में माइकोराइजा के महत्व और AM कवक के उपयोग पर प्रकाश डाला। उन्होंने AM माइकोराईजा बनाने की विधि भी समझाई। स्थानीय माइकोराइजल स्ट्रेन से AM बायोफर्टिलाइजर तैयार किया है तथा इसका चौरा और मुशकबला की खेती में प्रभावकारिता का परीक्षण किया है।

डॉ॰ जोगिंदर सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने मोटे अनाज के महत्व और उनके औषधीय गुणों महत्व पर अपना व्यख्यान दिया। उन्होनें बताया कि देश के प्रंधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय मंचों में मोटे अनाजों के बारे में प्रचार प्रसार किया तथा भारत सरकार के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र ने साल 2023 को International Year of Millets के रूप में घोषित किया है। उन्होंने कहा कि 50 साल पहले तक भारत में मिलेट्स जैसे बाजरा, ज्वार, ज्वार, रागी, कोदो, कुटकी आदि प्रमुख अनाज थे। लेकिन हरित क्रांति के पश्चात इनकी खेती में भी कमी आई । मोटे अनाज़ को 'सुपरफूड' और 'स्मार्टफूड' का दर्जा दिया गया है, क्योंकि यह पोषक तत्वों जैसे कि प्रोटीन, फाइबर, बी-विटामिन, कैल्शियम, आयरन, मैंगनीज, मैग्नीशियम, फास्फोरस, जिंक, पोटेशियम, कॉपर, एंटीऑक्सिडेंट और सेलेनियम से भरपूर होते हैं। यह अनाज हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद हैं। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए मोटे अनाज प्रासंगिक हो चले हैं। क्योंकि मोटे अनाजों की खेती करने के लिए बहुत अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है। उन्होंने मिलेट्स फूड को टूरिस्म के साथ जोड़ने का सुझाव दिया क्योंकि यह फूड ओरगनिक है और आज ओरगनिक उत्पादों की मांग बढ़ रही है, टूरिस्ट के मध्य इसके उपयोग को बढ़ावा देना होगा ताकि इसकी मांग बड़े लोगों के अनाज में बाजार में मांग बढ़े। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जाना, नगर, पतलीकूल तथा इसके आसपास के 35 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में **डॉ. जोगिंदर सिंह** ने मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक, वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा किसानों का कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम की झलकियां

मीडिया कवरेज़

दिव्य हिमाचल (14.12.2022)

पंजाब केसरी (14.12.2022)

****